

# Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



VOL. 174

Founder's Essay

## बुद्ध बनने का मार्ग

पुण्डरीक सूत्र को बुद्ध बनने की समुचित देशना कहते हैं। यदि यह सच है, तो हम पुण्डरीक सूत्र के अनुसार बुद्ध बनने के बारे में कितना सही कह सकते हैं? जैसा कि मैं हमेशा कहता हूँ, पुण्डरीक सूत्र में बुद्ध पूर्ण निश्चितता के साथ घोषणा करते हैं:

“जो लोग धर्म को सुनते हैं, कोई भी बुद्ध बनने में असफल नहीं होगा।”

लेकिन जब मैं यह कहता हूँ, तो कुछ लोग पूछते हैं, “क्या मैं लोटस सूत्र सुनकर ही बुद्ध बन सकता हूँ?”

“सुनना” का अर्थ है बुद्ध के उपदेश को हृदय की गहराई से समझ कर स्वीकारना है, जो बिल्कुल सही है। देशना को अपने कानों से सुनना मात्र ही यथेष्ट नहीं है, या केवल अपने बौद्धिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए सुनना पर्याप्त नहीं है। एक देशना के साथ प्रारंभ करना ठीक है, लेकिन ध्यान से सुनना चाहिए और जो सुना है, उसे व्यवहार में लाना चाहिए। फिर, ऐसा करने के अपने दृढ संकल्प के क्षण में, आप अपने लिए उस सत्य को स्पष्ट रूप से अनुभव करने में सक्षम होंगे, जो “त्रिसहस्र लोक” की सत्यता में है।

ऐसे लोगों के लिए है, जिन्होंने कभी किसी कार्य को नहीं किया है, जो दयाभाव से प्रेरित हृदय से हो और दूसरों की मदद करना चाहते हैं, उनके लिए बौद्ध धर्म की सच्ची देशनाओं की अमूल्यता की प्रशंसा करना कितना कठिन है। लेकिन किसी को भी सच्चा आनंद मिल सकता है यदि वह एक ही देशना को जैसा सीखा है, व्यवहार में लाता है। रिश्शो कोसेइ काइ का तिरपन वर्ष का इतिहास इसकी स्पष्ट रूप से साक्षी है। बोधिसत्व एक बार में एक ही चर्या का अभ्यास करते हैं, वह धीरे-धीरे पर्याप्त हो जाता है। यदि आप दूसरों को लाभ पहुँचाने में स्वयं लग जाते हैं, तो आप उन रूढ़ियों और दृष्टिकोणों के बंधन से मुक्त हो जाते हैं, जो आपको बाँधते हैं, और आपका बुद्धत्व-स्वभाव चमकने लगेगा। बुद्धत्व के मार्ग पर लोगों का मार्गदर्शन करना स्वयं के बुद्ध बनने का मार्ग है।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 9  
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 94 - 95

Living the Lotus  
Vol. 174 (March 2020)

Senior Editor: Koichi Saito  
Editor: Kensuke Osada  
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly  
by Rissho Kosei International,  
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,  
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.  
TEL: +81-3-5341-1124  
FAX: +81-3-5341-1224  
Email: [living.the.lotus.rk-international](mailto:living.the.lotus.rk-international)

रिश्शो कोसेइकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।



## संतुष्टि को जानने की खुशी

श्रद्धेय निचिको निवानो  
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ

### अपनी इच्छाओं को जाने दो

“किसी के हृदय में बहुत सारी इच्छाएँ और घने हिमपात हो रहे हैं-जैसे जैसे उनका परत दर परत जमता जाता है, मार्ग ढक जाता है।”

जैसे ही बसंत का गर्म मौसम आता है, यह बौद्ध कविता उकसाने लगती है। लेकिन जैसे ही यह कविता हमें बताती है, अगर उनकी इच्छाएँ अनियंत्रित हो जाती हैं, तो लोग मार्ग से भटक जाते हैं जिस मार्ग से उन्हें भले आदमी की तरह चलना चाहिए।

इस महीने, जैसा कि हमारी संस्था अपनी बयासीवाँ वर्षगांठ को रेखांकित कर रही हैं, मैं आपको याद दिलाना चाहूँगा कि सह-सम्पादक म्योको नागानुमा ने संस्थापक निक्क्यो निवानो के साथ मिलकर रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना की थी, वह हमेशा कहती थीं, “अपनी इच्छाओं को जाने दो और पुण्य के मार्ग पर चलो।”

क्योंकि इच्छा स्वाभाविक है, जीने के लिए यह आवश्यक है। हालाँकि, जो लोग बहुत अधिक इच्छाएँ रखते हैं और कहते हैं कि “मुझे वह चाहिए” और “मैं जो करना चाहता हूँ, वह करूँगा,” वे अपने स्वार्थ में इतना अंधे हो गये हैं कि उनके लिए अन्य लोगों का विचार करने का महत्व गौण हो जाता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि मन “अहंकार” = “मेरी बातों” में डूबा होता है।

हालाँकि, जो लोग किसी चीज की मामूली मात्रा से संतुष्ट हो सकते हैं, चाहे कुछ भी हो, उनमें अन्य लोगों के बारे में सोचने के लिए मन में पर्याप्त स्थान होता है और इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि उनको कुछ पसंदीदा भोजन मिलता है, तो उनमें भावना स्वाभाविक रूप से सामने आती है कि सब कुछ अपने आप खा लेना कितनी शर्म की बात होगी। इसलिए वे इसे दूसरों के साथ साझा करना चाहते हैं। हम कह सकते हैं, आखिरकार, एक मामूली व्यक्ति जितना चाहता है उसे उससे अधिक की चाह नहीं होती है।

जब मनुष्य दूसरों की भावनाओं पर विचार करता है और चीजों के लिए अपनी इच्छा के बजाय दयाभाव से प्रेरित होकर अपने कार्यों को नियंत्रित होने देता है, तो मुझे लगता है, कि सह-सम्पादक के आशय का अहसास होता है, जब वह कहती हैं “अपनी इच्छाओं को जाने दो और पुण्य को आने दो,” जिसका आशय है कि हम जिस गुणों को हृदय से धारण करते हैं वह स्वाभाविक रूप से भीतर से अच्छा होता है।





## आभारी होना

पुण्डरीक सूत्र के 11वें “रत्नस्तूप”, का उद्धव परिवर्त में, जो लोग पुण्डरीक सूत्र की देशना को सीखते हैं और उनका अभ्यास करते हैं-वे शब्द के वास्तविक अर्थ में उद्यमशील हैं-“देशना और कठोर संयम के अभ्यासों के पालन करनेवाले हैं।”

शब्दकोश के अनुसार, “भ्रम को कमजोर करने और उससे मुक्ति पा लेने” का अर्थ है “तपस्या” और ऐसा करने के लिए परिश्रमी होना-दिन में केवल एक भोजन करना, बलकल वस्त्र पहनना, इसे “तपस्या का अभ्यास” कहा जाता है।

तपस्या के अभ्यास की बात करें, तो मन में जिनकी बात आती है, वे महाकश्यप हैं जिन्हें “तपस्या में अग्रणी” कहा जाता है। महाकश्यप के बारे में कहा जाता है कि “वे ऐसे पुरुष थे जो कभी अपने चीवर, भिक्षा में मिला भोजन और सयनासन जैसी चीजों के बारे में शिकायत का एक शब्द भी नहीं बोलते थे।”

आज के संदर्भ में, हम सोच सकते हैं कि इसे व्यवहार में लाना कितना मुश्किल है, लेकिन “संतुष्ट होने और किसी भी चीज के बारे में कभी शिकायत नहीं करने” का अर्थ है कि आपको जो प्राप्त हो उसके लिए आभार प्रकट करना, अहंकारी बातें नहीं करना, “अच्छे और बुरे” की बातें नहीं करना है। इसके अलावा, कुछ साहित्य “तपस्या के अभ्यास” की बेहद सरल शब्दों में व्याख्या “कम इच्छा होने और संतुष्टि जानने” के रूप में करते हैं। अल्प इच्छाओं की जीवन शैली, यह जानना कि क्या पर्याप्त है, जो कुछ भी हमें प्राप्त होता है उसे विनम्रता से स्वीकार करना और कृतज्ञभाव से सबके साथ रहना है, जिससे हम अपने दैनिक जीवन के दौरान इस मानसिक दृष्टिकोण का निर्माण कर सकते हैं।

इसके अलावा, इस तरह की चीजें, जैसेकि किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत उपस्थित, से मैंने सीखा है कि निर्णय लेने का अर्थ अपने जीवन के सम्बन्ध “जीवन नहीं लेने के शील” को तोड़ना नहीं है। इस अर्थ में, एक जीवन शैली जिसमें हम चीजों के बारे में गैर-विवादास्पद होते हैं, वह शास्त्र में पूर्व वर्णित “शीलों के पालन करनेवालों” के अनुरूप है। इसके अलावा, हम स्वीकार करते हैं कि हमें ऐसा करने की अनुमति देना है, वह हमारे पुण्डरीक सूत्र के अध्ययन के माध्यम से जागृति आने से है। ऐसा होने पर, हम यह भी कह सकते हैं कि हम जो पुण्डरीक सूत्र के माध्यम से बुद्ध के उपदेशों का अध्ययन करते हैं, हम हमेशा संतोष को जानने की खुशी की स्थिति में होते हैं।

हालाँकि, अगर हम इसे समझते हैं, तो कभी ऐसा समय आता है, जब हम चीजों को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार नहीं कर सकते हैं। उस समय, यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने हाथों को जोड़कर श्रद्धा से और आदर प्रकट करने की मुद्रा में आरंभ करें।

उदाहरण के लिए, भोजन के समय अपने हाथों को श्रद्धा से जोड़कर कहें कि “मैं कृतज्ञतापूर्वक ग्रहण करता हूँ”, और इस आदतन क्रिया के माध्यम से हम अपने भोजन के अवयवों के जीवन के लिए, भोजन करने में सक्षम होने के लिए कृतज्ञता से अपने हृदय का पोषण करते हैं, और इसके अतिरिक्त, जिंदा रहने के लिए भी।

अपने हाथों को जोड़कर श्रद्धा से सभी चीजों को ग्रहण करने के पूर्व कहें, हम अपना जीवन जीते चले आ रहे हैं-और उसमें संतुष्टि और आनंद है-और वास्तविक संतुष्टि और खुशी है।

From Kosei, March 2020



## समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः

### प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

#### सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

#### अध्याय 13: दृढ रहने का प्रोत्साहन (2)

पहले किस्त में चर्चा की गई है कि शाक्यमुनि की पालक माता, महाप्रजापति और उनकी पूर्व पत्नी, यशोधरा-दोनों भिक्षुणियों को बुद्धत्व प्राप्त का आश्वासन दिया गया था। परिषद में बोधिसत्व और अन्य जन बुद्ध द्वारा सत्य के प्रदर्शन से प्रभावित थे कि सभी लोगों में समान रूप से बुद्ध स्वभाव है और उन्होंने अपने जीवन के मूल्य पर भी इस अमूल्य देशना के संरक्षण रक्षा और अभ्यास करने का व्रत लिया है।

#### दृढ रहने पर परिवर्त की बीस पंक्तियाँ

अब, इस परिवर्त की अस्सी-पदों वाली गाथा की जाँच करते हैं, क्योंकि इसका विशेष महत्व है। इसके चीनी मूल में बीस गाथाएँ हैं, जिनमें से प्रत्येक गाथा में चार पद हैं, यही वजह है कि इस मार्ग को अक्सर जापानी में “दृढ रहने पर परिवर्त की बीस गाथाएँ” के रूप में प्रायः संदर्भित किया जाता है। यह सर्वविदित है कि महान जापानी बौद्ध पुजारी निचिरेन को ज्ञात होने के बाद कि कविता में व्यक्त हर चीज स्वयं उनपर लागू होती है, उन्हें महसूस हुआ कि उनका जन्म धर्म के पतन काल के दौरान पुण्डरीक सूत्र की देशना के प्रचार प्रसार के लिए हुआ था।

इस गाथा का अर्थ इस प्रकार है।

“क्योंकि हम बुद्ध की गहराई से पूजार्चना करते हैं, उस सूत्र को भी मानते हैं जिसमें उनका सबसे महत्वपूर्ण उपदेश है। इस प्रकार, हम सूत्र की रक्षा करने और इसके संदेश के प्रसार के लिए सभी कठिनाइयों और उत्पीड़न को सहन करने में सक्षम हैं। हम अपने शरीर और जीवन की भी परवाह नहीं करेंगे। जब तक संसार में एक भी व्यक्ति इस सर्वोच्चतम देशना से अछूता रह जाता है, हम अपने प्रयासों में कमी आने नहीं दे सकते हैं।

“हम, आम जनता की गलतफहमियों के कारण उनके तिरस्कार से, अन्य मतावलम्बियों की शत्रुता से उत्पन्न हो रहे उत्पीड़न से, या वे जो ताकतवरों की सुरक्षा में रहकर इस देशना की अवहेलना से और इसे बाहर करने के प्रयास से, डरे बिना सद्धर्म का सर्वत्र प्रचार प्रसार करेंगे।

“हम लोकप्रतिष्ठ के दूत की तरह काम करेंगे और सद्धर्म की

पूरी शक्ति लगाकर प्रचार प्रसार करेंगे, जिससे कि बुद्ध सुखशांति से सके।”

#### शक्तिशाली शत्रुओं के तीन प्रकार

पुण्डरीक सूत्र के तीन प्रकार के शक्तिशाली शत्रुओं का उल्लेख यहाँ किया गया है। भले ही आज हम धर्म की स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं और ये शत्रु अब उस तरह के उत्पीड़न का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं, जो दो हजार वर्ष पूर्व भारत में पुण्डरीक सूत्र में विश्वास करनेवाले सहन करते थे, या सात सौ वर्ष पूर्व जापान में अनुभव किए गए निचिरेन के तीन प्रकार के शत्रु अभी भी मौजूद हैं।

शत्रुओं का पहला प्रकार “सांसारिक अहंकार के लोग” है, जो





नहीं तो पुण्डरीक सूत्र को जानते हैं और नहीं तो पढ़ते हैं, इसकी देशना को रुढ़िवादी मानते हैं और उसमें विश्वास करनेवालों की अवमानना करते हैं। अतीत में, आधा दोष उसमें विश्वास करनेवालों पर आता था। हमें सोचना और संयम से रहना चाहिए, या ऐसा न हो कि, हमें धार्मिक दृष्टिकोण अपनाना पड़े, या देशना की शिक्षा का राजनैतिक लाभ के लिए उपयोग करना पड़े, या इस जीवन में केवल इसके भौतिक लाभों का प्रचार करना पड़े। हमें हमेशा देशना के सच्चे और आवश्यक अर्थ का स्वयं को मॉडल बनाना चाहिए, और आंतरिक बल में लिप्त सज्जनता के द्वारा सच्चे विश्वास के दृष्टिकोण को बनाए रखना चाहिए, क्योंकि हम देशना की विवेचना करते हैं।

शत्रुओं का दूसरा प्रकार “धार्मिक अहंकार के लोग” है। ये अन्य धर्मों और संप्रदायों के लोग हैं जो न केवल विद्वेष से भरे हैं, बल्कि पुण्डरीक सूत्र की सच्चाई को देखने का कोई प्रयास भी नहीं करते हैं। सहिष्णुता धर्म के सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक है, विशेष रूप से बौद्ध धर्म में। धर्म हमें उन त्रुटियों को क्षमा करना, जो दूसरों ने किया है, और सभी लोगों को गले लगाना सिखाता है। तथाकथित धार्मिक लोग जो सिद्धांतों और प्रथाओं में सतही मतभेदों के कारण दूसरे धर्मों और संप्रदायों से विद्वेष करते हैं, वे लोग सच्चे अर्थ में धार्मिक नहीं हैं। यदि हम स्वयं पुण्डरीक सूत्र के अनुयायी हैं, लेकिन ऐसे लोगों के आलोचक हैं और उनसे झगड़ते हैं, तो हम सहिष्णुता की भावना को रौंद रहे हैं। बल्कि, हमें हमेशा धैर्य रखना और संयमित रहना चाहिए, क्योंकि हमें अपने आप को इस हद तक नियंत्रित रखना चाहिए, जिससे कि ऐसे लोग धर्म के सही अर्थ के प्रति सजग हो जायें।

शत्रुओं का तीसरा प्रकार, “धर्मनिष्ठ लोगों का मिथ्या अहंकार।” धर्मनिष्ठों या विद्वानों के संसार में उच्च स्थानों पर पदस्थ हैं, लोगों के बीच लोकप्रिय हैं और अपनी स्थिति के नशे में हैं और उसकी रक्षा करने के लिए दृढ़ हैं, और सच्ची शिक्षा दीक्षा को बदनाम करते हैं। सच्चे अर्थ में महान पुरुष, जिसे सच्चाई की परख है, खुलकर इसका समर्थन करेगा, लेकिन संकीर्ण दिमाग का व्यक्ति नए सच से सीधे मुख मोड़ लेगा, जो शिक्षा दीक्षा को कलंकित करता है। तथ्य यह है कि ऐसे लोगों को उच्च और शक्तिशाली के रूप में देखा जाता है, उनके लिए क्रेडिट मानसम्मान का उपयोग करना आसान होता है और उसमें आनंद आता है, और उनके प्रभाव की महानता का मतलब है कि वे

सबसे बड़े शातिर हैं।

हमें सीधे अहंकार के इन रूपों का विरोध करने की आवश्यकता नहीं है; मार्ग पर चलते रहने के साथ ही सही देशना का प्रचार और प्रसार करना पर्याप्त है। सही देशना कभी नहीं लुप्त होगा। इस बीच, यदि हम में से कोई उच्च पद पर पहुँच जाता है, तो हमें इस तरह के अहंकार में गिरने से बचना चाहिए और दिमाग की ताजगी और दिल की कोमलता के साथ युवा लोगों के विचारों पर ग्राह्यशीलता बनाए रखना चाहिए।

## नहीं शरीर और नहीं जीवन की चिन्ता करनी है

पुण्डरीक सूत्र के अभ्यास करनेवालों का आदर्श वाक्य, “नहीं तो शरीर और नहीं तो जीवन,” प्रभावोत्पादक गाथा का पद है:

अपने अमूल्य शरीर और जीवन का क्या,

हम केवल सर्वोत्तम मार्ग की परवाह करेंगे।

समकालीन व्यक्ति के लिए, “न तो शरीर और न ही जीवन



## समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें



छोड़ना” का मतलब किसी को स्वयं के जीवन की परवाह नहीं करना है। इसके बजाय, इसका मतलब है कि व्यक्तिगत लाभ पर ध्यान नहीं देकर, अच्छे कारण के लिए अथक परिश्रम करना, और इस बात का डर नहीं होना कि दूसरे क्या सोचते हैं या क्या कहते हैं।

यदि कोई पूछता है कि पुण्डरीक सूत्र का अभ्यास करनेवाले अपने स्वयं के व्यक्तिगत लाभ पर ध्यान केंद्रित क्यों नहीं करते हैं, तो इसका उत्तर है कि वे सत्य की देखभाल करते हैं, जो चमत्कारिक धर्म है। जब तक एक भी व्यक्ति है, जो इस सर्वोच्च देशना द्वारा अल्लता रह गया है, वे अपने प्रयास को आराम नहीं कर सकते हैं। जब हम भावना की पवित्रता की स्थिति में होते हैं, तभी हम पुण्डरीक सूत्र के सच्चे अभ्यासी कहे जा सकते हैं।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्रः प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.136-41.



**Living the**  
 **LOTUS**

### संतुष्टि को जानने की खुशी

इस महीने, रिश्शो कोसेइ काइ ने अपनी स्थापना की वर्षगाँठ मनाई। यदि संस्थापक निक्क्यो निवानो और सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने बयासी वर्ष पूर्व रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना नहीं की होती, तो मेरा क्या हस्र होता। जब मैं ऐसा सोचता हूँ, मेरी गहरी कृतज्ञता प्रकट नहीं होती है।

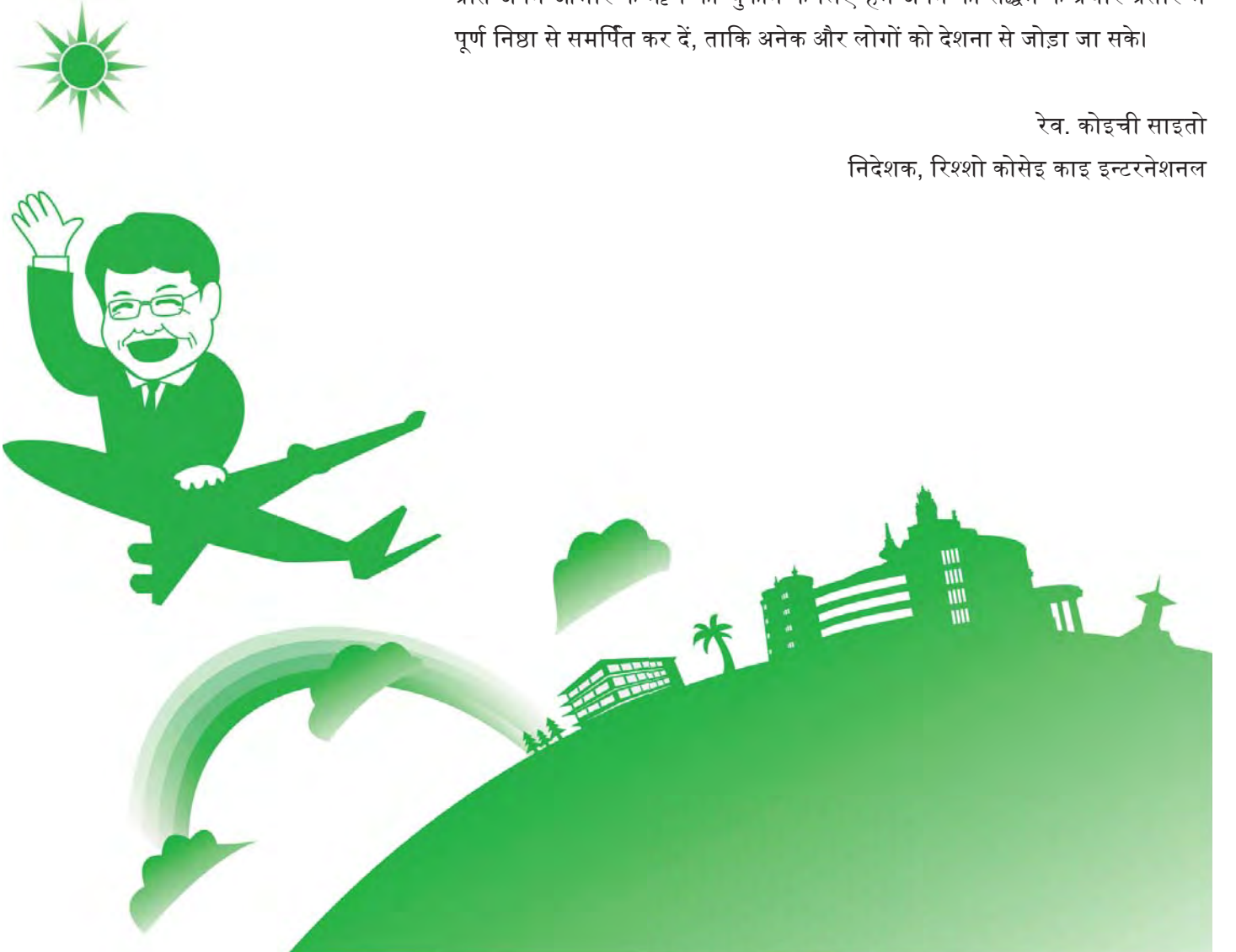
इस महीने के लिए अपने संदेश में प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने सह-संस्थापक नागानुमा को उद्धृत किया, जिन्होंने कहा है, “यदि आप अपनी तृष्णा को छोड़ देते हैं, तो उसकी जगह गुण आपके पास आएँगे।” इस उद्धरण के माध्यम से, प्रेसिडेण्ट निवानो हमें बताते हैं कि यदि हमारे पास अभी जो कुछ भी है, हम उसके लिए आभारी हैं, तो हम तृष्णा से छुटकारा पा सकते हैं और संतोष के साथ जीवन जी सकते हैं।

संस्थापक निवानो ने इस आशा से रिश्शो कोसेइ काइ को स्थापित किया था कि जितना संभव हो, उतने लोगों को जीवन के मार्ग का पता चलेगा, जिसकी पुण्डरीक सूत्र में व्याख्या की गई है और सच्ची खुशी का एहसास होगा।

इस महीने, संस्थापक, सह-संस्थापक और पूर्ववर्ती अनेक नेताओं और सदस्यों के प्रति अपने आभार के ऋण को चुकाने के लिए हम अपने को सद्धर्म के प्रचार प्रसार में पूर्ण निष्ठा से समर्पित कर दें, ताकि अनेक और लोगों को देशना से जोड़ा जा सके।

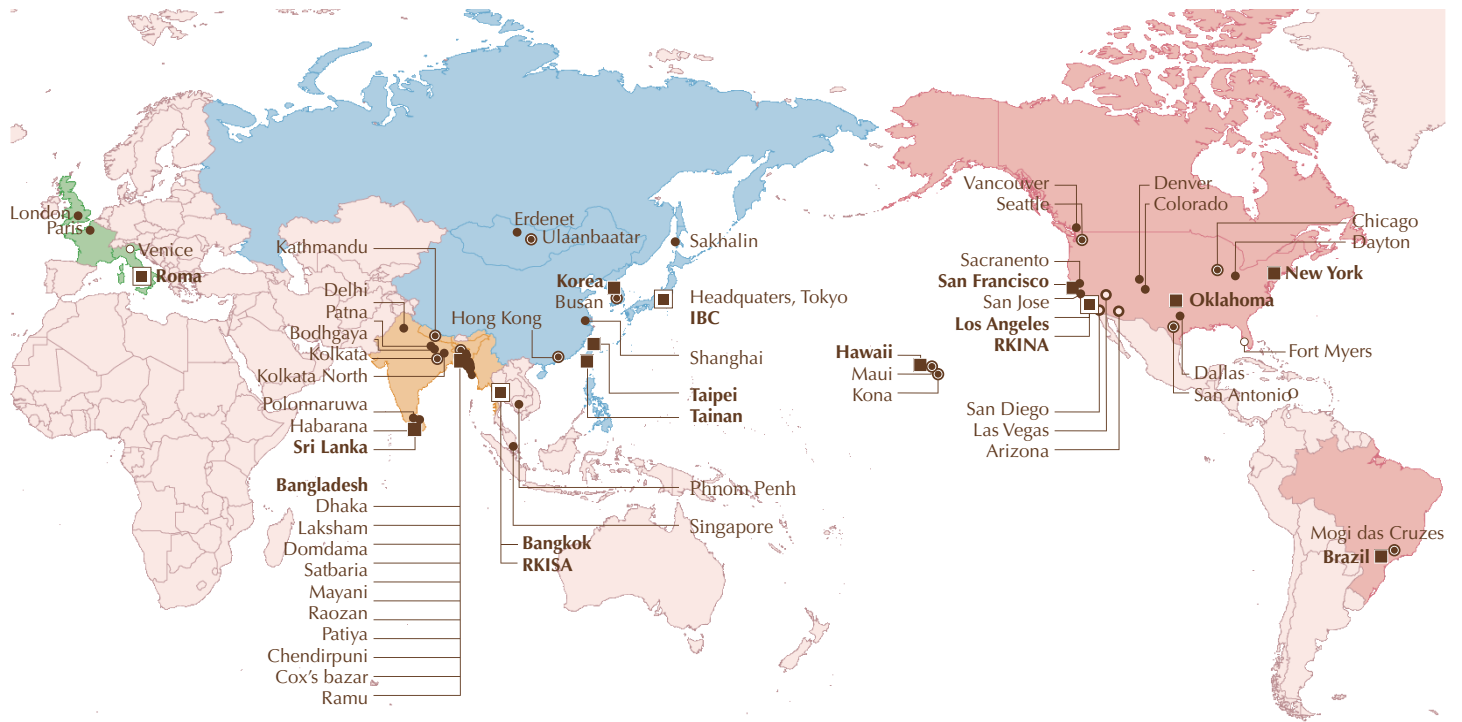
रेव. कोइची साइतो

निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल





# Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



## Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA  
 TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633  
 Email: [info@rkhawaii.org](mailto:info@rkhawaii.org) URL: <http://www.rkhawaii.org>

## Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA  
 TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

## Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA  
 TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

## Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA  
 POBox 33636, CA 90033, USA  
 TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567  
 Email: [rk-la@sbcglobal.net](mailto:rk-la@sbcglobal.net) URL: <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

## Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA  
 POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA  
 TEL: 1-650-359-6951 FAX: 1-650-359-6437  
 Email: [info@rksf.org](mailto:info@rksf.org) URL: <http://www.rksf.org>

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

- Rissho Kosei-kai of Sacramento**
- Rissho Kosei-kai of San Jose**

## Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA  
 TEL: 1-212-867-5677 Email: [rkny39@gmail.com](mailto:rkny39@gmail.com) URL: <http://rk-ny.org>

## Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA  
 TEL: 1-773-842-5654  
 Email: [murakami4838@aol.com](mailto:murakami4838@aol.com) URL: <http://rkchi.org>

## Rissho Kosei-kai of Fort Myers

URL: <http://www.rkftmyersbuddhism.org>

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA  
 POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA  
 TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303  
 Email: [rkokdc@gmail.com](mailto:rkokdc@gmail.com) URL: <http://www.rkok-dharmacenter.org>

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA  
 TEL: 1-303-446-0792

## Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA  
 URL: <http://www.rkina-dayton.com>

## The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA  
 TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437  
 Email: [info@rkina.org](mailto:info@rkina.org) URL: <http://www.rkina.org>

## Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA  
 (Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA  
 TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745  
 Email: [dharmasanantonio@gmail.com](mailto:dharmasanantonio@gmail.com)  
 URL: <http://www.rkina.org/sanantonio.html>

## Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA  
 TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261  
 Email: [rkseattlewashington@gmail.com](mailto:rkseattlewashington@gmail.com)  
 URL: <http://buddhistlearningcenter.org>

## Rissho Kosei-kai of Vancouver

Please contact RKINA

## Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil  
 TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377  
 Email: [risho@rkk.org.br](mailto:risho@rkk.org.br) URL: <http://www.rkk.org.br>

Facebook: <https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil>  
Instagram: <https://www.instagram.com/rkkbrasil>

### Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

### 在家佛教韓國立正佼成會

〒 04420 大韓民國 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3  
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea  
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

### 在家佛教韓國立正佼成會釜山支部

〒 48460 大韓民國釜山廣域市南區水營路 174, 3F  
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea  
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

### 社團法人在家佛教立正佼成會

台灣台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大廈 4 樓  
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongheng District, Taipei City 100, Taiwan  
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

### 台南市在家佛教立正佼成會

台灣台南市崇明 23 街 45 號  
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan  
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488  
Email: koseikaitainan@gmail.com

### Rissho Kosei-kai South Asia Division

Thai Rissho Friendship Foundation  
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand  
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

### Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

### Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

### Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

### Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,  
Bihar, India

### Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

### Rissho Kosei-kai of Central Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,  
New Delhi 110060, India

### Rissho Kosei-kai of Singapore

### Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,  
Phnom Penh, Cambodia

### RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia

Thai Rissho Friendship Foundation  
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand  
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

### Rissho Kosei-kai of Bangkok

Thai Rissho Friendship Foundation  
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand  
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

### Rissho Kosei Dhamma Foundation

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka  
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

### Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

### Rissho Kosei-kai Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh  
TEL/FAX: 880-31-626575

### Rissho Kosei-kai Mayani

Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

### Rissho Kosei-kai Damdama

Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

### Rissho Kosei-kai Patiya

China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

### Rissho Kosei-kai Satbaria

Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

### Rissho Kosei-kai Chendhirpuni,

Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,  
Bangladesh

### Rissho Kosei-kai Dhaka

408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

### Rissho Kosei-kai Laksham

Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

### Rissho Kosei-kai Cox's Bazar

Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

### Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

### Rissho Kosei-kai Raozan

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

### Buddiyskiy khram "Lotos"

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia  
TEL: 7-4242-77-05-14

### Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

### Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

### Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoro-1, Chingeltei district,  
Ulaanbaatar 15160, Mongolia

(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia

TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

### Rissho Kosei-kai of Erdenet

2F Ikh Mandal building, Khurenbulag bag, Bayan-Undur sum,  
Orkhon province, Mongolia

### Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia  
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

### Rissho Kosei-kai of the UK

### Rissho Kosei-kai of Paris

### Rissho Kosei-kai of Venezia

### Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC )

166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F  
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan  
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: <http://www.ibt-rk.org>